

मेरे लण्ड की ठरक और चूत चुदाई-2

“ गांव की गोरी रूपा से मेरा इश्क तो हुआ पर हमें मौक़ा नहीं मिल पाया चुदाई का.. इस बीच मुझे एक चूत मिल गई..फिर अचानक एक दिन एक शादी में मुझे रूप मिली तो मैंने जुगाड़ करके उसे चोद दिया..

”

...

Story By: Antarvasna अन्तर्वसिना (antarvasna)

Posted: Friday, April 17th, 2015

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [मेरे लण्ड की ठरक और चूत चुदाई-2](#)

मेरे लण्ड की ठरक और चूत चुदाई-2

हम दोनों एक-दूसरे को चुम्बन करने लगे और एक-दूसरे के कपड़े उतारने लगे। थोड़ी देर में ही हम दोनों बिल्कुल नंगे हो चुके थे। उसने मेरे लण्ड अपने हाथों से पकड़ा और अपने मुँह में लेकर चूसने लगी।

दोस्तो.. लवड़े की चुसाई के आनन्द के बारे में मैं अपनी जुबान से बयान नहीं कर सकता.. जब कभी आप अपना लौड़ा किसी मस्त औरत से चुसवाओगे.. तब ही इसका वास्तविक आनन्द को समझ आ सकता है।

वो भी रण्डियों की तरह मेरा लण्ड चूस रही थी। थोड़ी ही देर में मेरे लण्ड ने अपना माल छोड़ दिया.. उसने सारा रस पी लिया और मेरी तरफ अपनी चूत कर दी। उस दिन पहली बार मुझे नंगी चूत के दर्शन हुए। मैंने मन में सोचा- ये है वो करामती छेद.. जिसके लिए लोग फांसी पर चढ़ने को भी तैयार रहते हैं। मैं उसकी चूत पर हाथ फेरा और एकदम से उसको ज़ोर से भींच दिया।

‘आह्ह..’

उसे दर्द हुआ.. वो बोल उठी- हय.. मेरे राजा.. दर्द होता है.. जरा प्यार से चाटो इसे..

मैं उसकी चूत के पास अपना मुँह लेकर गया.. वहाँ एक अलग सी महक आ रही थी और एक पानी जैसा लिसलिसा पदार्थ बह रहा था।

मैंने उसे ज़ीभ से चाटा.. तो उसका स्वाद बड़ा अजीब सा था.. लेकिन अच्छा था..

अब मैं उसकी चूत को पागलों की तरह चाट रहा था.. वो भी अपनी गाण्ड हिला-हिला कर मेरा साथ दे रही थी।

उसके मुँह से कुछ आवाजें निकल रही थीं- सस्स... स्सईईईई सस्स आहहहाआ.. चाट

भोसड़ी के.. चाट सस्स्सईई..

वो मस्त हो गई और थोड़ी देर में उसने अपना पानी छोड़ दिया.. और मैं वो सारा पानी पी गया ।

कुछ ही देर में मेरा लण्ड दोबारा तैयार हो चुका था, वो भी चुदास भरी आवाज में बोली- राजा डाल दे इसे.. मेरी चूत के अन्दर.. अब मुझ से इंतज़ार नहीं होता..

मैंने भी अपना लण्ड उसकी चूत पर लगाया और धक्का मारा.. लेकिन चिकनाई बहुत होने की वजह से लण्ड अन्दर नहीं जा पाया था तो वो एकदम से बोली- घुसा भोसड़ी के.. या तुझे घुसेड़ना भी नहीं आता ।

उसने मेरा लण्ड अपने हाथ से पकड़ा और चूत के मुँह पर लगाया और बोली- लगा अब धक्का..

मैंने धक्का लगाया.. अबकी बार मेरा लण्ड उसकी चूत की गहराई में उतर चुका था । उसके मुँह से एक तेज आवाज़ निकली- स्स्स्स्स्स... ईईईईईई ईईईईईईईई..

मैंने मस्ती में धक्के लगाना चालू कर दिए । थोड़ी देर में वो घोड़ी बन गई और मैं उसको पीछे से चोदने लगा ।

वो बोली- मुझे ये तरीका बेहद पसंद है ।

मैं भी उसकी चूत पर अपने लण्ड से ताबड़तोड़ धक्के मार रहा था ।

वो बीच-बीच में आवाज़ें निकाल रही थी- चोद भोसड़ी के.. चोद.. फाड़ दे इसे.. मादरचोद चोद सस्सिई.. स्स्स्स्स्स्सस्स.. अह.. ।

दस मिनट के बाद हम दोनों का एक साथ पानी निकल गया । हम दोनों एकदम शान्त हो गए और दोनों निढाल हो कर लेट गए ।

फिर कुछ मिनटों के बाद उसने उठकर पहले मेरा लण्ड साफ़ किया.. और अपनी चूत को साफ़ किया।

उस दिन हमने दिन में तीन बार चुदाई की।

फिर अगले दिन भी खूब चुदाई की। मैंने उसको गर्भनिरोधक गोली लाकर दी.. क्योंकि हमने चुदाई में कन्डोम इस्तेमाल नहीं किया था।

कुछ दिन बाद पता चला कि उसकी शादी दुबारा तय हो चुकी है.. तो मेरा दिल टूट गया और दो माह के बाद उसकी शादी हो गई।

अब मेरी हालत फिर पहले जैसी हो गई।

एक दिन मैं स्कूल से वापस आया तो मैंने देखा कि रूपा, उसका भाई और उसके माँम-डैड हमारे घर पर बैठे हैं।

बाद में मुझे पता चला कि यहाँ पर उनके किसी दोस्त के बेटे की शादी है इसलिए वो यहाँ आए हैं। मेरी तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा.. ऐसा लगा कि जो अधूरा काम मैंने गाँव में छोड़ दिया था.. अब यहाँ पूरा करूँगा।

उन्होंने हमें भी शादी में चलने को कहा लेकिन मेरे माँम-डैड ने मना कर दिया। उन्होंने मुझे चलने के लिए कहा.. तो मैंने माँम-डैड की तरफ़ देखा.. क्योंकि मेरा तो जाने का मूड था।

माँम-डैड ने भी हाँ कर दी.. तो मैं तैयार होने के लिए अपने कमरे में आ गया।

कमरे से मैंने रूपा को आवाज़ लगाई.. वो मेरे कमरे में आ गई। मैंने उसको बाँहों में पकड़ लिया और एक तगड़ा चुम्बन किया, फिर मैंने उससे पूछा- क्या पहनूँ ?

तो उसने मुझे जींस टी-शर्ट पहनने के लिए ही बोल दिया.. मुझे लगा कि वो मुझसे सूट पहनने को बोलेगी।

मैं तैयार होकर नीचे आ गया।

हमने घर से बाहर आकर.. जहाँ पर शादी थी.. वहाँ जाने के लिए.. ऑटो किया। ऑटो में रूपा मेरे बगल में बैठ गई.. उसके पफर्यूम की महक मुझे मदहोश करने लगी। लेकिन अभी ऑटो में सब लोग बैठे हुए थे.. तो मैंने खुद पर काबू किया। कुछ ही देर में हम सभी शादी में पहुँच गए। वहाँ खाना आदि खाने लगे लेकिन मेरा मन खाना खाने का नहीं था।

मेरे नजरें तो रूपा को ही ढूँढ रही थीं.. जो पता नहीं कहाँ गायब हो गई थी। थोड़ी देर में किसी लड़की ने मेरे कंधे पर हाथ रखा.. मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वो रूपा थी।

वो बोली- कैसी लग रही हूँ मैं..

मैंने उसे देखा और बस देखता ही रह गया। क्या माल लग रही थी वो.. मेरा तो लण्ड सलामी देने लग गया, उसने लहंगा पहन रखा था।

मेरे मन में तो आया कि अभी यहीं खड़े-खड़े ही चोद दूँ।

लेकिन मैंने खुद को काबू किया और उसको बोला- थोड़ी देर में यहीं पर मिलना.. मैं अभी आता हूँ।

जहाँ पर ये शादी हो रही थी.. वो एक खुला गार्डन था।

अब मैं एक सेफ जगह तलाश कर रहा था.. थोड़ी देर में एक ऐसी जगह मुझे मिल भी गई। गार्डन में एक जगह मुझे काफ़ी सारे टेन्ट लगाने वाले परदे रखे दिखाई दिए।

चूँकि अब पीपों का तो कोई काम बचा नहीं था.. तो उधर किसी को आना ही नहीं था। उसके पीछे एक ऊंची दीवार भी थी.. मैंने पास पड़ी एक टेबल उठाई और एक साइड से उसे लगा कर तंबू का आधा हिस्सा तैयार कर दिया।

अब मैं रूपा को खोजने पहुँचा.. लेकिन रूपा वहाँ नहीं थी।

थोड़ी देर में ही वो मुझे मिल गई.. मैंने उसको बोला- इधर आओ..

वो मेरे पास आ गई.. मैंने बोला- टेन्ट के पीछे चलो.. मुझे कुछ बात करनी हैं।

मैं उसे उस जगह ले गया.. जहाँ मैंने चुदाई के लिए जगह तैयार की थी।

वो बोली- यहाँ क्यों लाए हो.. किसी ने अगर हमें देख लिया तो ?

मैं बोला- इधर अब कोई नहीं आएगा.. इस सामान का काम खत्म हो चुका है और इधर अंधेरा भी है।

वहाँ पर बस चाँद की रोशनी ही थी.. और मैंने उसको चूमना चालू कर दिया।

उसने मुझे रोका- ये सब ग़लत है..

मैंने उसको बोला- मैंने तुमसे पहले ही 'हाँ' ले ली थी..

तो कुछ नहीं बोली.. मैंने उसे चूमना चालू कर दिया.. मैं अपना एक हाथ उसके मम्मों पर ले गया और धीरे से उसके सन्तरे दबा दिए।

उसके मुँह से 'आआहहाअ..' की आवाज़ निकल गई।

फिर मैंने उसको अपने बनाए हुए टेन्ट में ले गया.. जो सिर्फ़ 2 फिट या 3 फिट ही ऊंचा था। मैं उसको नीचे करके खुद उसके ऊपर आ गया।

अब एक हाथ मैंने उसके लहंगे में घुसा दिया और चूत पर ले गया.. उसकी चूत पर काफ़ी बड़े बाल थे।

मैं उसकी चूत पर हाथ फिराने लगा.. वो भी गर्म हो चुकी थी।

मैं नीचे को सरका और उसकी चूत पर अपने होंठ लगा दिए.. वो तो जैसे पागल ही हो गई।

वो अपनी गाण्ड को उठा-उठा कर मज़े लेने लगी।

मुझे लगा.. अब मुझे देर नहीं करनी चाहिए, मैं उसके ऊपर आया.. अपनी जींस नीचे की..

और उसका लहंगा ऊपर उठा दिया। उसकी टाँगें फैलाई और लण्ड उसकी चूत पर लगा दिया।

मुझे अहसास हुआ कि ये काफ़ी टाइट चूत है.. मैंने लण्ड पर थोड़ा थूक लगाया और उसकी चूत पर रख कर एक ज़ोरदार धक्का लगाया।

मेरा आधा लण्ड उसकी चूत में उतर गया उसकी चीख निकल गई.. क्योंकि उसकी चूत अभी तक अनचुदी थी।

दोस्तों कुँवारी चूत का अपना अलग ही मज़ा है।

मैंने उसके होंठों पर अपने होंठ रख दिए और एक और ज़ोरदार धक्का लगाया।

अब मेरा पूरा लण्ड उसको चूत में समा गया। उसकी आँखों से आंसू निकल रहे थे.. लेकिन मैं उसकी सील तोड़कर बहुत खुश था।

अब मैंने धीरे-धीरे धक्के लगाने चालू किए.. तो उसका भी कुछ दर्द कम हुआ।

फिर थोड़ी देर में धक्कों की बरसात चालू हो गई.. थोड़ी ही देर में वो एकदम से अकड़ गई और उसका पानी निकल गया।

लेकिन मेरा अभी नहीं हुआ था.. तो उसकी चूत के पानी छोड़ देने के बाद कुछ जोश बढ़ा देने वाली आवाज़ें आने लगीं- फच्च.. फुहह.. फहक्क ककक..

मैं जबरदस्त रफ़्तार से चुदाई कर रहा था.. थोड़ी ही देर में मेरा काम भी होने वाला था.. तो मैंने अपना लण्ड बाहर निकाल लिया.. क्योंकि मैं उसके अन्दर अपना माल नहीं गिराना चाहता था.. ताकि वो पेट से ना हो जाए।

मैंने वहाँ ज़मीन पर अपना सारा माल गिरा दिया।

अब हम दोनों एक-दूसरे को ठीक करके वापस शादी में आ गए।

वहाँ उसके भाई को हम पर शक हो गया क्योंकि उसने हमें एक साथ बाहर से आते हुए देख लिए था.. पर वो कुछ बोला नहीं और फिर मैं वापस अपने घर आ गया... वो सभी लोग वहीं शादी में रुक गए।

सुबह जब वो लोग घर आए.. तो रूपा को बुखार आ रहा था। उसने मुझे बताया कि रात को चुदाई करने के बाद से उससे ठीक से चला भी नहीं जा रहा है।

मैं हँस दिया.. तो वो गुस्सा हो गई।

ये बातें हम अपने कमरे यानि मेरे कमरे में कर रहे थे.. लेकिन हमने ध्यान नहीं दिया कि कोई हमारी बातें भी सुन रहा है।

ये सब बातें दरवाज़े के पास खड़ा उसका भाई सुन रहा था, वो अन्दर आया.. उसने मुझे घूर कर देखा और रूपा को लेकर नीचे चला गया।

फिर वो लोग गाँव चले गए.. कुछ दिन बाद मेरे पास रूपा का फोन आया, उसने बताया कि उसका भाई आजकल उसने कहीं भी नहीं जाने देता है.. और उसकी जल्दी शादी करवाने वाला है.. उन्होंने लड़का भी देख लिया है।

मैं उसको सुन ही रहा था कि उसने मुझे कहा- तुम मुझे यहाँ से भगा कर ले जाओ।

लेकिन मैं अभी शादी करने या उसे भगाने तो क्या.. किसी को भी भगाने के बारे में सोच भी नहीं सकता था और शादी के लिए घर पर बोल भी नहीं सकता था। क्योंकि अभी मेरी उम्र सिर्फ 18 ही थी।

मैंने अपना मोबाइल नंबर बदल दिया। कुछ दिनों बाद रूपा की शादी हो गई, उसके बाद उससे मेरी मुलाकात हरिद्वार में तीन साल बाद हुई, वो अपने बेटे को लेकर उसका मुंडन

करवाने आई थी।

उसका पति पुलिस में है.. मुझे ये जानकार काफ़ी अच्छा लगा कि वो उसके साथ खुश है।

हाँ.. लेकिन रूपा ने मुझसे बात नहीं की.. शायद वो अब भी मुझसे नाराज़ थी लेकिन उस वक़्त मैं भी क्या कर सकता था, शायद ये उसकी 'हाय' थी कि उस दिन से आज तक मैं चूत के लिए तरस रहा हूँ।

मैं आज अपना लण्ड हिलाता हुआ अकेला हूँ.. पता नहीं कब चूत नसीब हो।

